

बगलामुखी चालीसा (Baglamukhi Chalisa)

॥बगलामुखी चालीसा॥

॥ दोहा ॥

सिर नवाइ बगलामुखी,
लिखूं चालीसा आज ॥

कृपा करहु मोपर सदा,
पूरन हो मम काज ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय श्री बगला माता ।
आदिशक्ति सब जग की त्राता ॥

बगला सम तब आनन माता ।
एहि ते भयउ नाम विख्याता ॥

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी ।
असतुति करहिं देव नर-नारी ॥

पीतवसन तन पर तव राजै ।
हाथहिं मुद्गर गदा विराजै ॥ 4 ॥

तीन नयन गल चम्पक माला ।
अमित तेज प्रकटत है भाला ॥

रत्न-जटित सिंहासन सोहै ।
शोभा निरखि सकल जन मोहै ॥

आसन पीतवर्ण महारानी ।
भक्तन की तुम हो वरदानी ॥

पीताभूषण पीतहिं चन्दन ।
सुर नर नाग करत सब वन्दन ॥ 8 ॥

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै ।
वेद पुराण संत अस भाखै ॥

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा ।
जाके किये होत दुख-नाशा ॥

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै ।
पीतवसन देवी पहिरावै ॥

कुंकुम अक्षत मोदक बेसन ।
अबिर गुलाल सुपारी चन्दन ॥ 12 ॥

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना ।
सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना ॥

धूप दीप कर्पूर की बाती ।
प्रेम-सहित तब करै आरती ॥

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे ।
पुरवहु मातु मनोरथ मोरे ॥

मातु भगति तब सब सुख खानी ।

करहुं कृपा मोपर जनजानी ॥ 16 ॥

त्रिविध ताप सब दुख नशावहु ।
तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु ॥

बार-बार मैं बिनवहुं तोहीं ।
अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं ॥

पूजनांत में हवन करावै ।
सा नर मनवांछित फल पावै ॥

सर्षप होम करै जो कोई ।
ताके वश सचराचर होई ॥ 20 ॥

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै ।
भक्ति प्रेम से हवन करावै ॥

दुख दरिद्र व्यापै नहिं सोई ।
निश्चय सुख-सम्पत्ति सब होई ॥

फूल अशोक हवन जो करई ।
ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई ॥

फल सेमर का होम करीजै ।
निश्चय वाको रिपु सब छीजै ॥ 24 ॥

गुग्गुल घृत होमै जो कोई ।
तेहि के वश में राजा होई ॥

गुग्गुल तिल संग होम करावै ।

ताको सकल बंध कट जावै ॥

बीलाक्षर का पाठ जो करहीं ।
बीज मंत्र तुम्हरो उच्चरहीं ॥

एक मास निशि जो कर जापा ।
तेहि कर मिटत सकल संतापा ॥ 28 ॥

घर की शुद्ध भूमि जहं होई ।
साधका जाप करै तहं सोई ॥

सेइ इच्छित फल निश्चय पावै ।
यामै नहिं कदु संशय लावै ॥

अथवा तीर नदी के जाई ।
साधक जाप करै मन लाई ॥

दस सहस्र जप करै जो कोई ।
सक काज तेहि कर सिधि होई ॥ 32 ॥

जाप करै जो लक्षहिं बारा ।
ताकर होय सुयशविस्तारा ॥

जो तव नाम जपै मन लाई ।
अल्पकाल महं रिपुहिं नसाई ॥

सप्तरात्रि जो पापहिं नामा ।
वाको पूरन हो सब कामा ॥

नव दिन जाप करे जो कोई ।

व्याधि रहित ताकर तन होई ॥ 36 ॥

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी ।
पावै पुत्रादिक फल चारी ॥

प्रातः सायं अरु मध्याना ।
धरे ध्यान होवैकल्याना ॥

कहं लगि महिमा कहौं तिहारी ।
नाम सदा शुभ मंगलकारी ॥

पाठ करै जो नित्या चालीसा ।
तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा ॥ 40 ॥

॥ दोहा ॥

सन्तशरण को तनय हूं,
कुलपति मिश्र सुनाम ।
हरिद्वार मण्डल बसूं,
धाम हरिपुर ग्राम ॥

उन्नीस सौ पिचानबे सन् की,
श्रावण शुक्ला मास ।
चालीसा रचना कियौ,
तव चरणन को दास ॥

Baglamukhi Chalisa (in English)

II doha II

sir naee bagalaamukhee,
likhoon chaaleesa aaj II

krpa karahu mopar sada,
poorn ho mam kaaj II

II chaupae II

jay jay jay shree bagala maata II
aadishakti sab jag kee traata II

bagala sam tab saar maata II
ehi te bhayu naam maatra II

shashi lalaat kundal chhavi nyaaree II
asatuti karahin dev nar-naaree II

peetavasan tan par tav raajai II
haathahin mudgar gada viraajai II 4 II

teen nayan gal champak mangal II
amit tej prakatat hai bhala II

ratn-jatit sinhaasan sohai II
shobha nirakhi sakal jan mohae II

aasan peetavarn mahaaraanee II
bhakton kee tum ho shobhaayamaan II

peetaabhooshan peetahin chandan ॥
sur nar naag karat sab vandan ॥ 8 ॥

ehi vidhi dhyaan hrday mein raakhai ॥
ved puraan sant as bhaakhai ॥

ab pooja vidhi karaun prakaasha ॥
jaake keen hot duhkh-naasha ॥

prathamahin peet dhvaja phaharaavai ॥
peetavasan devee phiraavai ॥

kunkum akshat modak baisan ॥
abeer gulaal supaaree chandan ॥ 12 ॥

maalya haridra aru phal paana ॥
sabahin chadhai dharai ur dhyaana ॥

dhoop deep karpoor kee baatee ॥
prem-sahit tab karai aaratee ॥

astuti karai haath dooo jore ॥
poorvahu maatu manorath more ॥

maatu bhagati tab sab sukh khaani ॥
karahun krpa mopar janajaani ॥ 16 ॥

trividh taap sab duhkh nashaavahu ॥
timir vaadeekar gyaan pushtavahu ॥

baar-baar main binavahun toheen ॥
aviral bhagati gyaan do mohin ॥

pooja-archana mein ghar karaavai ॥
sa nar manavaanchhit phal paavai ॥

sasp hom karai jo koe ॥
taake vash sacharaachar hoe ॥ 20 ॥

til tandul sang ksheer miraavai ॥
bhakti prem se ghar karaavai ॥

dukh daridr vyaapai nahin soi ॥
nishchit sukh-sampatti sab hoe ॥

phool ashok ghar jo karai ॥
taake grh sukh-sampatti bhaaree ॥

phal semar ka ghar karaijai ॥
nishchay vaako ripu sab chheenai ॥ 24 ॥

guggul ghrt homaay jo koe ॥
tehi ke vash mein raaja hoi ॥

guggul til sang hom karaavai ॥
taako sakal bandh kat jaavai ॥

beelaakshar ka paath jo karahen ॥
beej mantr tummharo uraheen ॥

ek maas nishi jo kar jaapa ॥
tehi kar mitat sakal santaapa ॥ 28 ॥

ghar kee shuddh bhoomi jahaan hoi ॥
sadaka jap karai tahan soi ॥

sei ichchhit phal nishchay paavai ॥
yaamai nahin kadu sanshay laavai ॥

ya teer nadee ke jay ॥
saadhak jap karai man laee ॥

das sahasr jap karai jo koe ॥
sak kaaj tehi kar siddhi hoe ॥ 32 ॥

jap karai jo lakshahin baara ॥
taakar hoy suyashavistaara ॥

jo tav naam japai man lai ॥
alpakaal mahan ripuhin nasaee ॥

saptaraatri jo paapahin naama ॥
vaako poorn ho sab kaam ॥

nav din jap kare jo koe ॥
vyaadhianupayogee taakar tan hoe ॥

dhyaan karai jo bandhya naaree ॥
paavai putraadik phal chaari ॥

praatah saayan aru madhyaana ॥
dhare dhyaan hovaikalyaana ॥

kahan laagee mahima kahaun tihaaree ॥
naam sada shubh mangalakaaree ॥

paath karai jo nitya chaaleesa ॥
tehi par krpa karahin gauresha ॥ 40 ॥

॥ doha ॥

santasharan ko tanay hoon,
pitar mishr sunaam ॥
haridvaar mandal basoon,
dhaam haripur graam ॥

unnees sau pichaanabe san kee,
shraavan shukl maas ॥
chaaleesa rachana kiyau,
tav charanan ko daas ॥
